विद्यालयी प्रक्रियाओं से मूल्यों और संस्कृति का विकास

अर्धेन्दु शेखर दाश

विद्यार्थियों में मूल्यों और संस्कृति के विकास में विद्यालय महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहाँ अपनाई जाने वाली छोटी-छोटी सार्थक प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों में बड़े बदलाव ला सकती हैं। यह लेख एक विद्यालय में अपनाई गई ऐसी ही प्रक्रियाओं को दर्शाने वाले सकारात्मक अनुभवों को साझा करता है।

चित्र 1: विद्यार्थियों के विभिन्न तरह के व्यवहारों पर कक्षा में बातचीत

दोपहर के भोजन अवकाश के दौरान मैं विद्यालय की दूसरी मंज़िल के गलियारे में खड़े होकर सामने मैदान में खेल रहे विद्यार्थियों को देख रहा था। मेरा ध्यान कक्षा 1 के 2 विद्यार्थियों पर गया जो एक साथ खेल रहे थे। खेलते-खेलते एक विद्यार्थी का पैर ग़लती से दूसरे से टकरा गया। दूसरा विद्यार्थी रोने लगा, और कक्षा में वापस चला गया। कुछ मिनट बाद, कक्षा 4 के दो सीनियर विद्यार्थी, रोते हुए विद्यार्थी को कक्षा से लेकर वापस मैदान में आए। अपनी जगह से मैंने इस घटना को ध्यान से देखा।

शुरू में, बड़ी कक्षा के विद्यार्थियों को आते देखकर मुझे चिन्ता हुई। समझ में नहीं आ रहा था कि वे स्थिति को कैसे सँभालेंगे। ज़रूरत पड़ने पर मैं हस्तक्षेप करने के लिए तैयार था। हालाँकि, जो कुछ मैंने देखा उससे मुझे ख़ुशी और गहरी सन्तुष्टि मिली, क्योंकि यह उन मूल्यों और संस्कृति को दर्शाता है जिन्हें हम अपने विद्यार्थियों में विकसित करने का प्रयास करते हैं। कक्षा 1 के दोनों विद्यार्थियों के साथ कक्षा 4 के दो सीनियर विद्यार्थी बातचीत करते दिखाई दिए। थोड़ी देर की बातचीत के बाद, दोनों विद्यार्थियों ने आपस में हाथ मिलाया और हमेशा की तरह सभी अपनी कक्षाओं में लौट गए।

चूँकि मैं दूसरी मंज़िल के गलियारे से देख रहा था, इसलिए उनकी आपसी बातचीत सुन नहीं पाया। अब मुझे यह जानने की उत्सुकता थी कि क्या चर्चा हुई। अगले दिन मैंने कक्षा 4 के दोनों विद्यार्थियों से बात की। उन्होंने बताया कि जब कक्षा 1 के विद्यार्थी को रोते हुए देखा, तब उन्होंने सबसे पहले उससे पूछा कि क्या हुआ है। फिर वे दूसरे विद्यार्थी के पास मैदान में गए, और उससे बातचीत कर स्थिति के बारे में पूछा। दूसरे विद्यार्थी ने बताया कि खेलते समय अनजाने में ऐसा हो गया था। सीनियर विद्यार्थियों ने कक्षा 1 के विद्यार्थियों को समझाया कि खेल के दौरान ग़लती हो सकती हैं, और चूँकि वे दोनों दोस्त हैं, उन्हें एक दूसरे पर भरोसा करना चाहिए, साथ खेलना चाहिए और साथ सीखना चाहिए। सीनियर विद्यार्थियों ने उन्हें खेल के दौरान एक दूसरे का ध्यान रखने को भी कहा जिससे किसी को चोट न लगे। फिर उन्होंने कक्षा 1 के विद्यार्थियों को आपस में हाथ मिलाने और ख़ुशी-ख़ुशी अपनी कक्षा में लौटने को कहा।

मैंने कक्षा 4 के विद्यार्थियों से पूछा कि उन्होंने मुश्किल परिस्थितियों को इतने धैर्य व शान्ति से सँभालना कहाँ सीखा। उन्होंने जवाब दिया, "विद्यालय में सीखा है।" उन्होंने बताया कि शिक्षक चर्चा के माध्यम से विवादों का समाधान करते हैं,

और कक्षा सभा के ज़रिए उन्होंने समस्याओं को शान्तिपूर्ण ढंग से सुलझाने के तरीक़े सीखे हैं। मैंने उन दोनों की सराहना की कि उन्होंने मज़बूत मूल्यों का प्रदर्शन किया और विश्वास तथा एकजुटता की संस्कृति को जिया। साथ ही मैं यह समझने की कोशिश करने लगा कि यह बात सिर्फ़ उन दो विद्यार्थियों की या एक घटना की नहीं है, बल्कि उन शैक्षिक प्रक्रियाओं की है जो विद्यालय की संस्कृति का हिस्सा बनकर विद्यार्थियों के जीवन का हिस्सा बन जाती हैं, जो कि शिक्षा का एक असल उद्देश्य है।

> **शिक्षक की भूमिका तर्क और चिन्तन का उपयोग करते हुए चर्चा को सही दिशा में ले जाना होती है।**

इसी सन्दर्भ में, मैं अपने विद्यालय की दो महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाओं–कक्षा सभा और थाली की सफ़ाई एवं जाँच–को अच्छे अभ्यास के रूप में उजागर करना चाहता हूँ। यह प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों को एकजुटता की संस्कृति को समझने, विवाद के सकारात्मक समाधान का अभ्यास करने, ज़िम्मेदारी विकसित करने और आत्मानुशासन सीखने में मदद करती हैं।

कक्षा सभा प्रत्येक कक्षा में आयोजित की जाती है ताकि नियमों, विद्यार्थियों के मुद्दों और सांस्कृतिक मूल्यों पर चर्चा की जा सके। कभी-कभी, सीनियर विद्यार्थियों को शिक्षक के मार्गदर्शन में छोटी कक्षाओं में चर्चा संचालित करने की ज़िम्मेदारी दी जाती है। इन चर्चाओं में अपनाया जाने वाला दृष्टिकोण लोकतांत्रिक होता है। प्रत्येक विद्यार्थी को भाग लेने और अपने विचार साझा करने का अवसर मिलता है। शिक्षक की भूमिका तर्क और चिन्तन का उपयोग करते हुए चर्चा को सही दिशा में ले जाना होती है।

चित्र 2 : एक दूसरे को सुनते, सहमत-असहमत होते विद्यार्थी

मैं कक्षा 1 की कक्षा सभा की एक घटना साझा करना चाहता हूँ। सत्र के दौरान, दो विद्यार्थियों के बीच हुए विवाद पर चर्चा की गई। एक विद्यार्थी ने अपने मित्र को मारा था। जब शिक्षक ने विद्यार्थी से पूछा कि क्या उसने ऐसा किया है, तो उसने शुरुआत में इनकार कर दिया। हालाँकि, जब शिक्षक ने समझाया कि हर कोई ग़लतियाँ करता है और उन्हें स्वीकार करना विकास की ओर एक क़दम है, तब विद्यार्थी ने अपनी ग़लती मान ली। यह क्षण अपने-आप में ईमानदारी और जवाबदेही का एक पाठ बन गया।

इसके बाद शिक्षक ने बाक़ी विद्यार्थियों को आमंत्रित किया कि वे अपने विचार साझा करें कि इस स्थिति को कैसे सुलझाया जाना चाहिए। दो प्रकार की प्रतिक्रियाएँ सामने आईं। एक समूह ने सुझाव दिया कि मारने वाले विद्यार्थी को बदले में मारना चाहिए, जबकि दूसरे ने उसे मार्गदर्शन देने और सुधार का अवसर देने का प्रस्ताव रखा। बदले की भावना का विचार उन चीज़ों को दर्शाता है जो विद्यार्थियों ने अपने आस-पास देखी थीं, जहाँ बड़े अकसर ग़लत व्यवहार का जवाब सज़ा देकर देते हैं।

इस सोच को चुनौती देने के लिए, शिक्षक ने विद्यार्थियों के बीच कुछ चिन्तनशील प्रश्न पूछकर एक संवाद शुरू किया :

> अगर हम उसे बदले में मारें तो क्या होगा?
>
> क्या इससे उसका ग़ुस्सा कम होगा या बढ़ेगा?
>
> अगर आप उसकी जगह होते, तब क्या आप ऐसी सज़ा की उम्मीद करते?
>
> इन प्रश्नों ने विद्यार्थियों को भावनात्मक प्रतिक्रिया देने की बजाय आलोचनात्मक रूप से सोचने के लिए प्रेरित किया। चर्चा से सामने आया कि प्रतिशोध स्थिति को और ख़राब कर सकता है, विद्यार्थी और ज़्यादा ग़ुस्सैल हो सकता है, विद्यालय के बाहर फिर से बदला ले सकता है, और दोस्ती टूट सकती है। इससे उनके सीखने और सहयोग पर असर पड़ेगा। इस चिन्तन के माध्यम से विद्यार्थियों ने समझा कि पलटकर मारना कोई रचनात्मक समाधान नहीं है।

इसके बाद चर्चा दूसरे विकल्प की ओर मुड़ी। विद्यार्थियों ने सहमति जताई कि मारने वाले विद्यार्थी को माफ़ी माँगनी चाहिए, और सबके सामने वादा करना चाहिए कि वह इस व्यवहार को दोहराएगा नहीं। विद्यार्थी ने ऐसा किया। अपने दोस्त से माफ़ी माँगी और सही व्यवहार करने का संकल्प लिया। यह सार्वजनिक स्वीकारोक्ति थी। इसमें स्वीकार करने वाले के प्रति बाक़ी साथियों का प्रशंसा भाव था। यह बात विद्यार्थी को अपने

चित्र 3 : थालियों की सफ़ाई की जाँच-परख करते विद्यार्थी

कार्यों पर विचार करने में मददगार साबित हुई। इसने अन्य साथियों के सामने जवाबदेही के महत्त्व को भी मज़बूत किया।

बेशक, यह अनिश्चित है कि मारने वाला विद्यार्थी वास्तव में अपने व्यवहार में बदलाव लाएगा या नहीं। वह ग़लती दोहरा भी सकता है और नहीं भी। लेकिन महत्त्वपूर्ण पहलू उस प्रक्रिया में निहित है जिसका पालन विद्यालय में किया गया। व्यवहार में बदलाव आने में समय लगता है और सकारात्मक प्रोत्साहन से इसमें गति आती है। इसके अलावा, बाक़ी विद्यार्थी भी रचनात्मक दृष्टिकोण से निर्णय लेना सीखते हैं, जो सबसे महत्त्वपूर्ण सीख है। इस तरह की प्रक्रियाएँ सहानुभूति, समस्या समाधान और नैतिक तर्कशीलता के कौशल को विकसित करती हैं।

ये प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों में मूल्यों और संस्कृति के विकास में मदद करती हैं, जो विद्यालय शिक्षा का एक आवश्यक हिस्सा है। उदाहरण के लिए, हमारे विद्यालय की मध्याह्न भोजन की प्रक्रिया में, विद्यार्थी और शिक्षक, दोनों भोजन परोसने, बैठने की व्यवस्था करने, और यह सुनिश्चित करने, कि सभी ठीक से खाएँ, जैसी ज़िम्मेदारियाँ साझा करते हैं। एक उल्लेखनीय प्रक्रिया यह भी विकसित की गई कि हर व्यक्ति दोपहर के भोजन के बाद अपनी थाली ख़ुद साफ़ करता है। कुछ विद्यार्थियों को यह जाँचने की ज़िम्मेदारी दी जाती है कि थालियाँ ठीक से साफ़ हुई हैं या नहीं। यदि नहीं, तब उन्हें दुबारा साफ़ करने के लिए वापस कर दिया जाता है। यह ज़िम्मेदारी विद्यार्थियों के बीच बदलती रहती है ताकि कक्षा 5 से 11 तक के लगभग सभी विद्यार्थियों को यह भूमिका निभाने का अवसर मिल सके। यह नियम शिक्षकों और विद्यार्थियों, दोनों पर समान रूप से लागू होता है। यदि किसी शिक्षक की थाली भी पूरी तरह साफ़ नहीं होती तब उसे वापस कर दिया जाता है और शिक्षक सम्मानपूर्वक उसे फिर से साफ़ करते हैं।

यह दिनचर्या समानता और सम्मान के मूल्यों को दर्शाती है। भूमिकाओं या स्थिति की परवाह किए बिना, हर कोई निर्धारित प्रक्रियाओं में भाग लेता है। यह पारम्परिक मान्यताओं को भी चुनौती देती है—उदाहरण के लिए, घर पर थालियाँ साफ़ करना अकसर किसी माँ, किसी महिला या लड़कियों की ज़िम्मेदारी माना जाता है। साझा ज़िम्मेदारी का अभ्यास करके, हमारा विद्यालय निष्पक्षता, पारस्परिक सम्मान और इस विश्वास को बढ़ावा देता है कि सामुदायिक जीवन में इस तरह के पदानुक्रम (हायरार्की) का कोई स्थान नहीं है। यह इस विचार को मज़बूत करता है कि हम सभी समान हैं, और हमें सामूहिक ज़िम्मेदारी के नियमों का सामान्य तौर पर सम्मान करना चाहिए।

भोजन से परे, ऐसी ही प्रक्रियाएँ विद्यालय जीवन के अन्य पहलुओं में भी समाहित हैं। विद्यार्थी, शिक्षकों के साथ मिलकर स्वच्छता बनाए रखने, शिक्षण सामग्री को व्यवस्थित करने और समूह गतिविधियों में साथियों का सहयोग करने जैसी ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं। यह दिनचर्या स्वामित्व की भावना, टीमवर्क और ज़िम्मेदारी को विकसित करती है। यह विद्यार्थियों को व्यापक प्रश्नों पर विचार करने के लिए भी प्रेरित करती है। मसलन, हमारे पर्यावरण को स्वस्थ रखने की ज़िम्मेदारी किसकी है; हमारे कार्य दूसरों को कैसे प्रभावित करते हैं; आदि। ऐसे चिन्तन विद्यार्थियों को रोज़मर्रा के कार्यों को सहयोग और सामाजिक ज़िम्मेदारी जैसे बड़े मूल्यों से जोड़ने में मदद करते हैं।

> **विद्यार्थी, शिक्षकों के साथ मिलकर स्वच्छता बनाए रखने, शिक्षण सामग्री को व्यवस्थित करने और समूह गतिविधियों में साथियों का सहयोग करने जैसी ज़िम्मेदारियाँ निभाते हैं।**

मूल रूप से, ये प्रक्रियाएँ केवल दिनचर्या नहीं हैं, बल्कि मूल्यों व विद्यालय संस्कृति के शक्तिशाली पाठ हैं। वे विद्यार्थियों को निष्पक्षता, सहानुभूति और सम्मान को आत्मसात करने में मदद करती हैं, जिससे वे ज़िम्मेदार व्यक्तियों के रूप में विकसित होते हैं। यही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है, सिर्फ़ शैक्षणिक उत्कृष्टता ही नहीं, बल्कि संस्कृति, मूल्यों और चरित्र का विकास भी।

अँग्रेज़ी से सम्पादकीय टीम द्वारा अनुवादित।

अर्धेन्दु शेखर दाश अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़ को नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। उनकी गणित शिक्षण के विभिन्न पहलूओं से जुड़ी कार्यशालाओं के आयोजन में अहम भूमिका रहती है। वे छत्तीसगढ़ राज्य के लिए तैयार की गईं पाठ्यपुस्तकों के लेखन कार्य से भी जुड़े रहे हैं।

सम्पर्क : arddhendu@azimpremjifoundation.org